

stellen AIT. Br. 4, 8. ÇAT. Br. 5, 1, 4, 1. यथा पराचं धावत्तमनुलिप्सेत 3, 2, 4, 36. न सर्वं जवं धावति ÇĀKṢH. Br. 18, 1. VS. 16, 20. मृगः सुतिं यति धावद्गुणम् AV. 10, 3, 6. यस्याग्निर्देवे ऽधिष्ठेति श्वात्तरा धावति TBH. 1, 4, 8, 6. ĀCV. Gṛh. 3, 9. धावद्भिर्हृयते यश्च जिग्युभिः *fliehend* RV. 1, 101, 6. AV. 5, 20, 5. 21, 2. 8, 8, 19. KATHOP. 6, 3. AIT. Up. 2, 8. — धावन्बलाधिका यः स्यात् *wer schneller laufen sollte* KATHS. 3, 51. धावत्यमी — रथ्याः ÇĀK. 8. SĀH. D. 11, 22. 13, 4. धावत्षु PrAB. 79, 6. राजा स्तेनेन गतव्या मुक्तकेशेन धावता MBH. 3, 2380. HIT. 1, 136. उन्मत्ताविव धावतः SĀV. 6, 5. R. GORR. 2, 62, 22. 3, 30, 11. 4, 47, 15. BHATT. 3, 45. दिवि धावति भूतभेदः BHĀG. P. 3, 11, 15. RĀGA-TAR. 5, 409. पश्चाद्भावंस्तु धावतः *hinterherlaufend* M. 2, 196. HIT. 14, 9. धावित्वा KATHS. 18, 37. 282. अधावीच्चारिसंमुखम् BHATT. 13, 67. वनगुत्तमांश्च धावतः *laufend in* MBH. 3, 2543. यथा धावति गौर्वत्सं स्रवन्तो वत्सला पयः *nachlaufen* 13, 3132. ब्रुभुता पोड्यमानो विषयानेव धावति 14, 681. आरुह्य शक्तिदेवो ऽश्मधावत्सूकरं प्रति *sprengen, reiten* KATHS. 26, 172. अंसपृष्ठे ऽथ धावतं कर्म *die hingleitende Hand* RĀGA-TAR. 4, 425. कालस्य चाव्यक्तगतेर्यो ऽतथाधवति व्रतुषु BHĀG. P. 3, 32, 37. अथापि धावति मनः KĀUṢ. 37. प्रभृणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये मतिः KATHS. 17, 138. गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः ÇĀK. 33. धर्मस्याधर्ममुद्धतं निरुक्तं धावतः RĀGA-TAR. 6, 61. med.: दिवस्पृष्ठे धावमानं सुपर्णम् AV. 13, 2, 37. चन्द्रमा अस्वर्गतरा सुपर्णा धावते दिवि RV. 1, 103, 1. धूमेन धावते दिवि 6, 48, 6. VS. 20, 40. सततं धावमानः MBH. 3, 12929. नृत्यते कूजते चैव धावते चलते तथा Vet. 30, 15. BHĀG. P. 4, 11, 20. 5, 26, 15. त्रिदशाश्चाप्यधावतः *losrennen auf* MBH. 3, 8854. R. 6, 13, 27. धावित *rennend, laufend*: एवमस्त्विति तौ मूढौ धावितौ *fliegen anzulaufen* KATHS. 3, 52.

— caus 1) *laufen lassen, zum Laufen antreiben*: यदि खलीनं मुखे प्रतिप्याहं तव पृष्ठे समारुह्य त्वां धावयामि । धावितस्तु यद्यश्चद्वेषसे PĀNĀT. 223, 12. — 2) *fahren, sich fahren lassen*: वारुनेन ÇAT. Br. 1, 8, 2, 9. अधानम् PĀNĀV. Br. 6, 3, 15. 16, 13, 11. धावयन्ब्राह्मकुमारं रथेन व्यच्छिन्त 13, 3, 12. ÇAT. Br. 2, 1, 4, 5. 10, 3, 5, 2. 11, 4, 2, 1. 6, 2, 1. 12, 4, 1, 10. Hierher vielleicht auch RV. 10, 146, 2. In der Stelle देवकीस्तन धावयती Z. d. d. m. G. 93 ist wohl *उत्तनं धयतीम्* zu lesen.

— अति *hinrinnen über, vorüberlaufen*: (सोमः) अति कुर्यासि धावति RV. 9, 3, 2. AV. 5, 8, 4.

— अनु 1) *zufließen, durchströmen*: अन्वेकं धावसि पूयमानः RV. 9, 97, 55. शरीरम् Suçr. 1, 43, 8. 44, 11. दोषं दोषः 83, 4. वापुः 328, 16. *durchdringen, sich verbreiten durch, über*: काञ्चित् मन्त्रितो मन्त्रा न राष्ट्रमनुधावति (vgl. u. परि 2.) so v. a. *im ganzen Reiche bekannt werden* R. GORR. 2, 109, 13. — 2) *nachlaufen, verfolgen* (in freundlicher oder feindlicher Absicht): अमित्राननु धावत AV. 11, 10, 1. 5, 21, 10. 20, 136, 11. ÇAT. Br. 2, 3, 4, 11. MBH. 3, 13178. 4, 1260. वत्सलवाग्यथा धेनुः स्वपुत्रमनुधावति R. GORR. 2, 23, 3. 3, 31, 27. 58, 39. KATHS. 13, 28. कुर्यात्काः सकृदधा । अन्वधावन् 18, 93. BHĀG. P. 3, 31, 36. 4, 11, 20. Daçak. in BENF. Chr. 200, 11. अविज्ञाप फलं यो हि कर्म त्वेवानुधावति *nachgehen* Daç. 1, 8. med.: अन्वधावत पापेऽशं ज्योत्स्नेव रजनीकर्म BHĀG. P. 4, 28, 34. — 3) *herbeieilen zu, Jmd zu Hilfe eilen* MBH. 1, 7095. मामिह वने ग्रस्यमानाम् — प्रक्षेपानेन विज्ञने किमर्थं नानुधावसि 3, 2384. — Vgl. अनुधावन 1.

— समनु *nachlaufen, verfolgen*: धर्नजयम् समन्वधावन् (so ist zu III. Theil.

lesen) MBH. 8, 4086.

— अप 1) *weglaufen*: अप धावतामर्त्या मर्त्यान्मा संवधम् AV. 4, 37, 12. ÇAT. Br. 4, 1, 2, 26. — 2) *abgehen von einer früheren Aussage, Etwas aussagen was mit einer früheren Aussage nicht übereinstimmt*: अपदि-श्यापदेऽयं च पुनर्यस्त्वपधावति M. 8, 54.

— अभि *zufließen; herbeilaufen, zulaufen auf, hinein zu, losrennen auf* (in freundlicher oder feindlicher Absicht): (वृषा) अभि द्रोणानि धावति RV. 9, 28, 4. 37, 6. 60, 3. कात्वेव कृतसंकेता समुद्रमभिधावति (नदी) R. 4, 41, 24. *rasch entgegengehen* PĀR. Gṛh. 2, 8. ग्रामघाते कृताभङ्गे पथि मोषाभिदर्शने । शक्तितो नाभिधावतो निर्वास्याः M. 9, 274. DRAUP. 6, 10, 27. 8, 55. प्रदीप्य यः प्रदीप्ताग्निं प्राङ्गिरं नाभिधावति । भस्मापि न स विन्देति शिष्टं वा च न MBH. 2, 2130. 3, 427. 2609. 4, 193. 6, 76. 16, 47. R. 1, 85, 6. 3, 26, 8. 6, 18, 7. VARĀH. Bṛh. S. 83, 19. KATHS. 15, 50. 26, 173. 244. BHĀG. P. 1, 8, 3. 3, 18, 16. मरीचितेयप्रायास्तान् (विषयान्) एवाभिधावति 5, 14, 10. 24, 2. 8, 2, 32. med. ARG. 3, 24. MBH. 16, 225. R. 1, 41, 27. 2, 40, 42. 100, 27. 3, 51, 4. 6, 18, 7. BHATT. 6, 41. — In der Stelle तत्संगर्मभिधावामि AV. 6, 119, 3 würde die Bedeutung *entgegenhandeln* passen oder ist viell. *अतिधावामि überschreiten, übertreten* zu lesen? — Vgl. अभिधावक.

— प्रत्यभि *hineilen zu*: कौतूहलाज्जनौघस्य सभां प्रत्यभिधावतः (प्रति (könnte auch mit स्मृा verbunden werden) R. GORR. 2, 82, 13.

— समभि *herbeieilen, losrennen auf, fliegen gegen* MBH. 6, 3119. 5588. R. 3, 32, 36. 5, 61, 10. अथ तूणीशया वाणा निर्मुक्ता इव पत्रगाः । रामं समभिधावन्तु 6, 34, 23. med. 19, 23.

— अत्र *herabrinnen, herabträufeln*: यत्ते गात्रादग्निना पृथमानादभि प्रूलं निरुतस्यावधावति RV. 1, 162, 11. अदो पदेवधावत्यवत्कमधि पर्वतात् AV. 2, 3, 1.

— व्यव *auseinander laufen, sich von einander trennen*: एवं भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि । समेत्य व्यवधावन्त R. 2, 105, 25. *weglaufen von*: व्यवधावेततस्तूर्णं ससर्पाच्छृणादिव MBH. 12, 10599.

— आ 1) *herbeirinnen*: आ कलशेषु धावति RV. 9, 17, 4. 67, 14. — 2) *Etwas (acc.) herbeiströmen*: आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रुयिम् RV. 9, 106, 9. — 3) *herbeilaufen, herbeieilen zu, heimkehren; losrennen auf*: अस्मां अच्चा सुमतिर्वामा धेनुरिव धावतु RV. 8, 22, 4. LĀTJ. 5, 12, 16. ÇAT. Br. 1, 1, 4, 12. सर्वतस्तत्ता दिश आ धावतु VS. 6, 36. आधावतदसंख्येयं शुश्रुभे सर्वतो बलम् HARIV. 10497. R. 4, 18, 20. आधावतो भटान्मधे BHĀG. P. 8, 10, 39. med.: भयादाधावमानाः MBH. 3, 2544.

— अन्वा *nach Jmd herlaufen* KĪTH. 13, 4.

— उपा *hinlaufen zu*: जलकाम्यया । मृगतृष्णामुपाधावेत् BHĀG. P. 7, 13, 28. — caus. *hinfahren zu*: निवृद्धशिरसमग्निमुपाधावयो चक्रुः ÇAT. Br. 10, 3, 5, 8.

— समा *in Gesellschaft herbeilaufen*: ततो मृगाः समाधावन्यत्र तिष्ठति केशवः HARIV. 14566. *heranlaufen*: सदृशवत्समाधावत् (lies °वन्) बभाषे तदनन्तरम् MBH. 3, 2763.

— उप *herzulaufen, hinein zu; die Zuflucht nehmen zu, um Hilfe angehen*: उपधावत्याः करौ चिच्छेद R. 1, 28, 16. TS. 2, 1, 4, 1. क्वचिदातपोदनिभान्विषयानुपधावति BHĀG. P. 5, 14, 6. प्राणप्रेप्सुरुपाधावद्वनम् MBH. 3, 15748. HARIV. 12235. ते यद्युप वा धावपुर्भयं वेच्छेरन् AIT. Br. 1, 30, 60*